

نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ أُولَٰئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۖ إِنَّ الَّذِينَ

आग में हैं हमेशा उस में रहेंगे वोही तमाम मख्लूक में बदतर हैं बेशक जो

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۖ جَزَاءُ وَّهُمْ

ईमान लाए और अच्छे काम किये वोही तमाम मख्लूक में बेहतर हैं उन का सिला

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا

उन के रब के पास बसने के बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा हमेशा

أَبَدًا ۗ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۗ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ۗ

रहें **अल्लाह** उन से राज़ी<sup>13</sup> और वोह उस से राज़ी<sup>14</sup> येह उस के लिये है जो अपने रब से डरे<sup>15</sup>

﴿آيَاتُهَا ٨﴾ ﴿سُورَةُ الزُّلْزَالَةِ مَكِّيَّةٌ ٩٣﴾ ﴿رُكُوعُهَا ١﴾

सूरए ज़लज़ाल मदनिय्या है, इस में आठ आयतें और एक रकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**अल्लाह** के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहूम वाला<sup>1</sup>

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۗ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۗ وَ

जब ज़मीन थरथरा दी जाए<sup>2</sup> जैसा उस का थरथराना ठहरा है<sup>3</sup> और ज़मीन अपने बोझ बाहर फेंक दे<sup>4</sup> और

قَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۗ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۗ بِأَنَّ رَبَّكَ

आदमी कहे इसे क्या हुआ<sup>5</sup> उस दिन वोह अपनी ख़बरें बताएगी<sup>6</sup> इस लिये कि तुम्हारे रब

أَوْحَىٰ لَهَا ۗ يَوْمَئِذٍ يُصْدِرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا ۗ لِيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۗ

ने उसे हुक्म भेजा<sup>7</sup> उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ फिरेगे<sup>8</sup> कई राह हो कर<sup>9</sup> ताकि अपना किया<sup>10</sup> दिखाए जाएं

ख़ालिस इस्लाम के मुत्तबेअ हो कर **13** : और उन के इताअत व इख़लास से **14** : उस के करम व अता से **15** : और उस की ना फ़रमानी

से बचे । **1** : सूरए "إِذَا زُلْزِلَتِ" जिस को "सूरए ज़लज़ाल" भी कहते हैं, मक्किय्या व बकौले मदनिय्या है । इस में एक रकूअ, आठ आयतें,

पेंतीस कलिमे और एक सो उन्तालीस हर्फ़ हैं । **2** : क़ियामत काइम होने के नज़्दीक या रोज़े क़ियामत **3** : और ज़मीन पर कोई दरख़्त कोई

इमारत कोई पहाड़ बाक़ी न रहे, हर चीज़ टूट फूट जाए । **4** : या'नी ख़ज़ाने और मुर्दे जो उस में हैं वोह सब निकल कर बाहर आ पड़ें ।

**5** : कि ऐसी मुज्तरिब हुई और इतना शदीद ज़लज़ला आया कि जो कुछ इस के अन्दर था सब बाहर फेंक दिया । **6** : और जो नेकी बदी उस

पर की गई सब बयान करेगी । हदीस शरीफ़ में है कि हर मर्द व औरत ने जो कुछ इस पर किया उस की गवाही देगी कहेगी : फुलां रोज़ येह

किया फुलां रोज़ येह । (٧٠) **7** : कि अपनी ख़बरें बयान करे और जो अमल उस पर किये गए हैं उन की ख़बरें दे **8** : मौक़िफ़े हिसाब से

**9** : कोई दहनी तरफ़ से हो कर जन्नत की तरफ़ जाएगा कोई बाई जानिब से दोज़ख़ की तरफ़ । **10** : या'नी अपने आ'माल की जज़ा ।

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

तो जो एक ज़रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़रा भर बुराई करे

شَرًّا يَرَهُ ۖ

उसे देखेगा<sup>11</sup>

﴿اٰیٰتِهَا ۱۱﴾ ﴿سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ ۱۳﴾ ﴿رُكُوْعُهَا ۱﴾

सूर अ़ादियात मक्किया है, इस में ग्यारह आयतें और एक रकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला<sup>1</sup>

وَالْعٰدِيٰتِ صَبْحًا ۙ ۱ فَالْمُورِيٰتِ قَدْحًا ۙ ۲ فَالْمُغِيْرٰتِ صَبْحًا ۙ ۳

कसम उन की जो दौड़ते हैं सीने से आवाज़ निकलती हुई<sup>2</sup> फिर पथरों से आग निकालते हैं सुम मार कर<sup>3</sup> फिर सुबुद होते ताराज करते हैं<sup>4</sup>

فَاثْرٰنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ ۴ فَوْسَطٰنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ ۵ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ

फिर उस वक्त गुबार उड़ाते हैं फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं बेशक आदमी अपने रब का

لَكَنُوْدٌ ۙ ۶ وَاِنَّهٗ عَلٰی ذٰلِكَ لَشٰهِيْدٌ ۙ ۷ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ

बड़ा नाशुक्रा है<sup>5</sup> और बेशक वोह इस पर<sup>6</sup> खुद गवाह है और बेशक वोह माल की चाहत में ज़रूर

لَشٰهِيْدٌ ۙ ۸ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِی الْقُبُوْرِ ۙ ۹ وَحُصِّلَ مَا فِی

करा है<sup>7</sup> तो क्या नहीं जानता जब उठाए जाएंगे<sup>8</sup> जो कब्रों में हैं और खोल दी जाएगी<sup>9</sup> जो

11 : हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما ने फ़रमाया कि हर मोमिन व काफ़िर को रोजे क़ियामत उस के नेक व बद आ'माल दिखाए जाएंगे, मोमिन को उस की नेकियां और बदियां दिखा कर **अल्लाह** तआला बदियां बख़्श देगा और नेकियों पर सवाब अ़ता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियां रद कर दी जाएंगी क्यूं कि कुफ़्र के सबब अकारत हो चुकीं और बदियों पर उस को अज़ाब किया जाएगा। मुहम्मद बिन का'ब कुरज़ी ने फ़रमाया कि काफ़िर ने ज़रा भर नेकी की होगी तो वोह उस की जज़ा दुन्या ही में देख लेगा यहां तक कि जब दुन्या से निकलेगा तो उस के पास कोई नेकी न होगी और मोमिन अपनी बदियों की सज़ा दुन्या में पाएगा तो आख़िरत में उस के साथ कोई बदी न होगी। इस आयत में तरगीब है कि नेकी थोड़ी सी भी कारआमद है और तरहीब (डराना) है कि गुनाह छोटा सा भी बवाल है। बा'जू मुफ़स्सिरनी ने येह फ़रमाया है कि पहली आयत मोमिनीन के हक़ में है और पिछली कुफ़्फ़ार के। 1 : "सूर العٰدِیٰتِ" बकौले हज़रते इब्ने मस्क़द رضی اللہ تعالیٰ عنہ मक्किया है और बकौले इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما मदनिय्या। इस में एक रकूअ, ग्यारह आयतें, चालीस कलिमे और एक सो त्रेसठ हर्फ़ हैं। 2 : मुराद इन से ग़ाज़ियों के घोड़े हैं जो जिहाद में दौड़ते हैं तो उन के सीनों से आवाज़ें निकलती हैं। 3 : जब पथरीली ज़मीन पर चलते हैं। 4 : दुश्मन को 5 : कि उस की ने'मतों से मुकर जाता है। 6 : अपने अ़मल से 7 : निहायत क़वी व तुवाना है और इबादत के लिये कमज़ोर। 8 : मुर्दे 9 : वोह हकीकत या वोह नेकी व बदी।